सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम् ।

आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम्।।5।।

अन्वयः सः अहम् आजन्मशुद्धानाम् आफलोदयकर्मणाम् आसमुद्रक्षितीशानाम् आनाकरधवर्त्मनाम् (रघुणाम् अन्वयं वक्ष्ये)।

अनुवादः वह (मन्दमति) मैं (कालिदास): जन्म से ही शुद्ध, फल प्राप्ति तथा कर्म में लीन, समुद्रपर्यन्त विस्तृत पृथ्वी के शासक तथा स्वर्ग तक गये हुए रथ के मार्ग वाले (रघुवंशी राजाओं का वर्णन करूंगा)।

टिप्पणियां

विशेषः 5 से 9 तक पांच श्लोक एक साथ पढ़ने चाहिये क्योंकि वे परस्पर सम्बद्ध हैं और इन सब के मेल से एक बड़ा वाक्य बन जाता है। इसमें अपने-आप अकेला पद्य अपरिपूर्ण है और उसे अन्वय के लिए अन्य पद्यों की आकांक्षा (अपेक्षा, आवश्यकता) है। संस्कृत में अकेला श्लोक जब अपने में परिपूर्ण होता है और अन्य श्लोक की अपेक्षा नहीं रखता तो ऐसे श्लोक को मुक्त कहते हैं। परन्तु परस्पर सापेक्ष दो श्लोकों के समूह को युग्मक कहते हैं। परस्पर सापेक्ष तीन श्लोकों के समूह को 'सन्दानितक' तथा ऐसे ही चार श्लोकों के समूह को 'कपालक' तथा पांच श्लोकों के समूह को 'कुलक' कहते हैं। यहां श्लोक संख्या 5 ''सोऽहमाजन्म''- से लेकर श्लोक संख्या 9 ''रघूणामन्वयं वक्ष्ये'' तक पांच श्लोकों का समूह 'कुलक' है। पहले चार श्लोक पांचवे श्लोक 'रघुणाम...' से सम्बद्ध हैं। अतः ये पांचो श्लोक अर्थ को समझने के लिए एक साथ ही पढ़े जाने चाहिये। इसका अन्वय इस प्रकार होगा:

''सोऽहम् आजन्मशुद्धानाम् रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये'' यहां 'रघूणाम्' विशेष्य पद है और **''आजन्मशुद्धानाम्''**, **''आफलोदयकर्मणाम्''** आदि षष्ठी बहुवचनान्त पद 'रघूणाम्' के विशेषण है तथा 'रघूणाम्' इनका विशेष्य है। **आजन्मशुद्धानाम्** आजन्मनः ('आङ् मर्यादाभिविध्योः'। अव्ययीभाव समास) शुद्धाः ये, तेषाम्-आजन्मशुद्धनाम् (सुप्सुपा से समास)। अर्थ है: जन्म से लेकर शुद्ध। सूर्यवंश के सम्राट् जन्म से शुद्ध होते थे क्योंकि उनके गर्भाधान आदि शास्त्रविहित संस्कारों का विधिवत् समुचित काल में अनुष्ठान किया जाता था। संस्कारों से पवित्र होकर उनका जन्म होता था। अतः वे आजन्म शुद्ध होते थे। देखिये: **''उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरैः। तीर्थोदकञ्च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।।''** (भवभूति-विरचित 'उत्तररामचरितम्')

आफलोदयकर्मणाम्: फलस्य उदयः, फलोदयः (षष्ठी तत्पुरुष), आ फलोदयात् इति आफलोदयम् (अव्ययीभाव), आफलोदयं कर्म येषां ते, आफलोदयकर्माणः (बहुव्रीहि), तेषाम्- आफलोदयकर्मणाम्। वे रघुवंशी सम्राट् जो तब तक कार्य करने में जुटे रहते थे जब तक सफलता प्राप्त नहीं होती थी। वे प्रारब्ध या अंगीकृत कार्य को पूर्ण करके ही छोड़ते थे, कभी भी अधूरा नहीं छोड़ते थे। शब्दार्थ है: फल (सफलता) के उदय (प्राप्ति) तक काम करने वाले: **''प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति''** (नीतिशतक)।

आनाकरथवर्त्मनाम्: न के कं अकं (सुख का अभाव), न अकं यत्र स नाकः (सुख के अभाव (दुःख) का अभाव-स्वर्ग यहां न का अन् में परिवर्तन नहीं हुआ है। आनाकं रथवर्त्म येषां (बहुव्रीहि) तेषाम्।

कालिदास के नायक अत्यन्त पराक्रमी तथा वीर है। स्वर्गलोक में रहने वाले देवताओं, विशेष रूप से इन्द्र को भी उनसे असुरों के नाश में सहायता लेना पड़ती है। अतः वे बहुधा देवलोक में आते जाते हैं। उनके रथ का मार्ग भूलोक ही नहीं, देवलोक तक फैला है। महाराजा दशरथ की कथा तो लोकविश्रुत है। वे देवासुर संग्राम में देवराज इन्द्र

के निमन्त्रण पर स्वर्ग से युद्ध के लिए गये। साथ में उनकी रानी कैकेयी भी गयी। वहां रथ के पहिये की कील के गिर जाने पर उसने अपने हाथ (अंगुलियों) से रथ की रक्षा की और दो (राम का वनवास और भारत को राज्य प्राप्ति) वर प्राप्त किये।

नाकः स्वर्ग, **वर्त्मन्**– मार्ग। जिनके रथ का मार्ग स्वर्ग तक गया है।

आसमुद्रक्षितीशानाम्ः आसमुद्रात् इति आसमुद्रम् (अव्ययीभाव) आसमुद्रम्, क्षितीशाः इति आसमुद्रक्षितीशाः, तेषाम्। अर्थ हैः समुद्रपर्यन्त पृथ्वी के राजाओं का। समुद्रपर्यन्त पृथ्वी पर शासन राजाओं का आदर्श होता था।

ऐतरेय ब्राह्मणा (8,41) कहता है कि उत्तम राजा वह है जिसके राज्य की सीमा पृथ्वी की प्राकृतिक सीमाओं तक व्याप्त है। **क्षितीशानाम्**– क्षिति (पृथ्वी)+ईश (स्वामी) पृथ्वी के स्वामी, उनका।